Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2023 4(1), 1290–1294

UNIQUE DESCRIPTION OF EMOTIONAL BEAUTY IN MAGAHI FOLK SONGS

मगही लोकगीतों में भाव सौंदर्य का अद्वितीय वर्णन

Ramniwas Sharma [1], Rashmi Ojha [1]

[1] NCWEB, Aryabhatta College, University of Delhi

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.3382

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: The folk songs sung in Magadh province have the beauty of the emotional and artistic aspects contained in important traditions. The traditional thoughts and practices present in these folk songs are propagated through singing songs for the welfare of the present society. Mainly, while singing these songs, a lot of attention is focused on the subject that what things are being discussed in its emotional aspect. Is the character of the hero or heroine present in it useful for the welfare of the society? And will one be able to get happiness by singing this song? And will the thing described in it have any bad effect on the society? In Magahi folk songs, character has always been given the first place. In these folk songs, the singer pays more attention to whether the characters presented in the songs they are singing are capable of bringing welfare to the society or not.

Hindi: मगध प्रांत में गाये जाने वाले लोकगीतों में महत्वपूर्ण परंपराओं में समाहित भावपक्ष और कलापक्ष की सुन्दरता बिराजमान रहती है। इन लोकगीतों में उपस्थित पारम्परिक विचारों और व्यवहारों को वर्तमान समाज के कल्याण के लिए गीत गायन के माध्यम से प्रसारित किया करते हैं। मुख्यतः इन गीतों के गायन के समय इस विषय पर अत्यधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता है कि इसके भाव पक्ष में किन-किन वस्तु पर चर्चा किया जा रहा है। क्या इसमें उपस्थित नायक अथवा नायिका का चरित्र समाज के कल्याण के लिए उपयोगी है? और क्या इस गीत के गायन पर आनन्द की प्राप्ति हो पायेगी? एवं इसमें वर्णित वस्तु का समाज पर कोई बुरा असर तो नहीं पड़ेगा। मगही लोकगीतों में विशेषतः चरित्र का स्थान सर्वदा प्रथम रहा है। इन लोकगीतों में गायक या गायिका इस बात पर अधिक ध्यान देते है कि हम जिन गीतों का गायन कर रहे है उसमें उपस्थित चरित्र समाज के मंगल करने योग्य है या नहीं।

1. प्रस्तावना

मगध प्रांत में गाये जाने वाले लोकगीतों में महत्वपूर्ण परंपराओं में समाहित भावपक्ष और कलापक्ष की सुन्दरता बिराजमान रहती है। इन लोकगीतों में उपस्थित पारम्परिक विचारों और व्यवहारों को वर्तमान समाज के कल्याण के लिए गीत गायन के माध्यम से प्रसारित किया करते हैं। मुख्यतः इन गीतों के गायन के समय इस विषय पर अत्यधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता है कि इसके भाव पक्ष में किन-किन वस्तु पर चर्चा किया जा रहा है। क्या इसमें उपस्थित नायक अथवा नायिका का चरित्र समाज के कल्याण के लिए उपयोगी है? और क्या इस गीत के गायन पर आनन्द की प्राप्ति हो पायेगी? एवं इसमें वर्णित वस्तु का समाज पर कोई बुरा असर तो नहीं पड़ेगा। मगही लोकगीतों में विशेषतः चरित्र का स्थान सर्वदा प्रथम रहा है। इन लोकगीतों में गायक या गायिका इस बात पर अधिक ध्यान देते है कि हम जिन गीतों का गायन कर रहे है उसमें उपस्थित चरित्र समाज के मंगल करने योग्य है या नहीं। मगध में गाये जाने वाले लोकगीतों में मुख्यतः दो प्रकार के चरित्रों का वर्णन मिलता है। पहला जिसमें मनुष्य जाति की गनना की जाती है और द्वितीय जिसमें मानव जाति से हट कर देवी-देवता एवं समस्त जीवों जिसे मानव कल्याण अथवा आनन्द की प्राप्ति के लिए गीतों में प्रयोग किया जा सके। मानवेत्तर वर्ग में मुख्यतः दो रूपों का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है। एक देवी-देवता और दूसरा प्राकृतिक उपमानों का प्रयोग किया जाता

है। प्राकृतिक उदाहरणों के अंतर्गत मुख्यतः पशु-पक्षी, वृक्ष, फूल, पौधे, वन, पर्वत आदि का प्रयोग अधिक किया जाता रहा है। मगध में गाये जाने वाली लोकगीतों में स्त्रियों के चरित्र का वर्णन हमेशा से प्रबल रहा है। इन लोकगीतों में स्त्रियों को मुख्यतः दो रूपों में देखा गया है जिसमें पहला स्वकीया का वर्णन मिलता है। यह वे स्त्रियां होती है जो सारी उम्र पतिव्रता स्त्री का स्वाभिमान की संदूर अपने माथे पर गर्व से किसी महारानी की ताज के भांति सजाई रखती है और किसी भी परिस्थिति में इस स्वाभिमान को आँच नहीं आने देतीं। वहीं दूसरी तरफ परकीयाओं का वर्णन अत्यधिक मात्रा में देखने को मिलता है। मगही लोकगीतों के माध्यम से परकियाओं में उन स्त्रियों का भी वर्णन मिलता है जो किसी पतिव्रता स्त्री के पुरुष को अपने प्रेम पास में हरने का कार्य करती है या यूं कहें कि उनका भरन पोषन का यह भी एक माध्यम रहा है। समाज में व्याप्त जानकारियों के माध्यम से मुख्यतः यही कहा जा सकता है कि परकियाएं अपने जीवन का भरण पोषण करने के लिए नृत्य को माध्यम बनाती है। मगही लोकगीतों में सामान्य स्त्री का कार्य व्यापार अधिक मात्रा में नहीं मिलता है। परन्तु परकियाओं का वर्णन अत्यधिक मात्रा में मिलता है जो परदेशी नायक को अपने रूप सौन्दर्य और प्रेम जाल में फसा कर उसके कमाए हुए धन को अपने जीवन यापन का माध्यम बना लेती है। परकिया का वर्णन मगही लोकगीतों में अधिक रूप से मिलने का एक कारण यह भी हो सकता है कि पुरुष वर्ग के कुछ विलासी जीवन यापन करने वाले प्रवृति के लोग अपने दाम्पत्य और पत्तित्व शील को त्याग कर परिकियाओं के भोग-विलास में अपना सर्वस्व निछावर कर देते है। जिससे त्रस्त होकर स्त्री वर्ग लोकगीतों के माध्यम से परकीयाओं पर अपना क्रोध प्रकट करती है। इस गीत के माध्यम से हम स्वकीयाएं स्त्रियों की चिन्ता को देखा सकते है।

''आयल बसंत रामा खिलल फुलवरीया हो तापर भँबरा लोभाय हे

कारी कोइलिया रामा भोरे पुकारे, ई दुख सहलो न जाय हे''।

इस गीत में नायिका का चरित्र प्रतिशोधात्मक हो गया है। यहाँ प्रगल्भा मुग्धा नायिका की दशा मुरझाए हुए उस फूल की भाँति प्रतीत होती है जिसमें प्रेम रूपी अमृत का अभाव होता जा रहा है। नायिका स्वयं को कोयल से इतनी सताई हुई आभास कर रही है कि वह वसंत में खीले हुए उस अत्यन्त मनोरम फुलवारी को भी उजाड़ फेकना चाहती है। नायिका का मानना है कि इस फुलवाड़ी के कारण ही कोयल आती है और मेरे स्वामी को ब्रह्म मुर्हूत में ही काम हेतु निद्रा से जगा कर मुझसे दूर कर देती है। शीलवती स्त्रियों का वर्णन प्रायः झूमर गीतों में ही सुनने को मिलता है। मगध प्रांत में गाये जाने वाली चम्पिया चैहट लोकगीतों में स्वकीया स्त्रियों का आदर्श चित्रण यथार्थपरक रूप में मिलती है। मगही लोकगीतों में आदिकाल से ही स्वकिया स्त्रियों का वर्णन की प्रबलता रही है। स्वकीया स्त्रियों के भाँति ही परकीया स्त्रियों का वर्णन अनूठे और विस्तृत उदाहरणों के साथ मगही लोक गीतों में अपना स्थान मजबूती के बनाए रखा है।

परकीयाओं का चरित्र मगध के लोकगीतों में प्रायः चतुर और अभिसारिका के रूप में किया गया है। परकीयाओं के अभिसारिक चरित्र के भी दो प्रकार होते है, एक शुक्लाभिसारिक, दूसरा कृष्णाभिसारिका। प्रायः ये दोनों ही गुण परकीया नायिकाओं में आदिकाल से ही उपलब्ध मिलते है। परकीया स्त्रियों में शुक्लाभिसारिका और कृष्णाभिसारिक के लक्षण पूर्ण रूप से समाहित होने के कारण वे पूणम की चाँदनी रात हो या आमावस्या की काली रात दोनों ही परिस्थितियों में अपने प्रिय से मिलने पहुंच जाती है। भारतीय शास्त्रों में अभिसारिका स्त्रियों के मिलने के मुख्यतः आठ स्थानों की चर्चा की गई है, जिसमें खेत, उपवन, भग्नमंदिर, दूती या सहेली का निवासस्थान, जंगल, तीर्थस्थान, श्मशान और नदीतट का वर्णन मिलता है।

जमुना किनारे कन्हाइया घटवरवा हो रामा,

एक हाथे घइला अलगावे हो रामा,

दोसर हाथे अँचरा घर बिल्हमावे हो रामा,

इस गीत में परकीया अपने प्रेमी से पनघट पर नोक-झोक करते पायी जाती है। इसी प्रकार एक और गीत में परकीया अपने चातुरी का प्रदर्शन करते हुए कहती है कि ''नाही मोरा सासूजी भाई से भतीजवा, नाही मोरा नन्हे के इयार, मोरा नइहरवा सासू पाय रे भइसिया, से हमे रघुवर गइया रे चराय''। इस लोकगीत में परकीया अपने सास के पूछने पर कहती है कि वह लड़का मेरा पूर्व मित्र नहीं बल्कि वह गोरखिया था जो नइहर में गाय, भईस चराने का कार्य करता है। आपने चातुरय से नायिका अपने प्रेमी को गोरखीया के रूप में प्रस्तुत करती है और प्रेमी अपनी प्रेमिका के प्रेम में इस तरह से लीन है कि उसे गोरखीया बनने में कोई परेशानी नही है वह अपने प्रेमिका से किसी भी परिस्थिति में मिलने को त्यार रहता है। एक दूसरे उदाहरण में तांत्रिक का वेश धारण किए नायक अपनी नायिका के घर पहुंच जाता है और तभी नायिका का पति परदेश से कमा कर एक हाथ में गजरा और दूसरे हाथ में बनारसी साड़ी लिए दरवाजे के बाहर से ही अपनी पत्नी को आवाज लगाता हुआ घर के आंगन में प्रवेश करता है। तभी वह घर में एक गैर पुरुष की उपस्थिति पाकर अपनी पत्नी से उसके बारे में पूछता है की वह परपुरुष कौन है? तभी नायिका अपनी चातुरय से जवाब देती है कि यह एक तांत्रिक बाबा है। इनसे जोग करा रहा हूँ कि परदेश में आपकी इससे भी अच्छी नौकरी लगे और घर में कोई काला साया न आने पाये। इतना कहते ही नायिका तांत्रिक को भिक्षा के रूप में चावल देते हुए जाने को कहती है और तांत्रिक रूपी प्रेमी बिना एक छन गवाए वहाँ से चला जाता है। तांत्रिक जाते-जाते यह संकेत भी दिए जाता है कि वह काली घाटी के शिखर पर तंत्र साधना कर रहा है। यदि कोई काला साया उसे परेशान करे तो वह वहाँ आ सकती है। परकीयाओं की ऐसी चातुरय से भरपूर गाथाएँ मगध के लोकगीतों में वृहद् रूप से उपलब्ध पाए जाते है। इन लोकगीतों के साथ-साथ उन स्त्रियों का भी वर्णन मिलता है जो अपने पति के परदेश जाने से अत्यंत पिड़ा में है या यू कहें उनकी वेदना विरह के ताप की भट्ठी में प्रवाहित हो रही है। इन स्त्रियों को प्रोशिताभर्तृका के नाम से भी पुकारा जाता है।

लगे चुनरी में दाग बुझाउ कैसे, लगे चुनरी में दाग बुझाऊ कैसे?

पिया परदेश देवर घर लरिका, सुतल भैसूर जगाऊँ कैसे? लगे चुनरी...

उपर्युक्त पंक्तियों में प्रोशितभर्तृका अपने प्रिय से विरह की ताप में जलन का मार्मिक वर्णन कर रही है। नायिका अपने पति की प्रतीक्षा बारहो मास करते रहती है और प्रिय आने को प्यार ही नहीं होता। विरह की असहनिय पीड़ा को बारहों मासा अनुभव करते हुए व्यतीत कर देती है।

मगध प्रांत में गाये जाने वाले लोकगीतों में ऐसी नायिकाओं का भी वर्णन मिलता है जिसमें उनका पति या प्रेमी का किसी पर स्त्री के साथ संबंध स्थापित करता है। इस तरह के चरित्रों का वर्णन 'कजरी' गीतों में पाया जाता है। इन गीतों में यह वर्णन देखने को मिलता है कि नायिका का पति अथवा प्रेमी दिन में तो नायिका से प्रेम की बातें करता है पर रात्रि के समय वह किसी अन्य स्त्री के साथ संभोग क्रिया में लिप्त रहता है और नायिका अपने नायक में पर स्त्री से संभोग के संकेत देखकर कुपित हो जाती है। यह घटना इस उदाहरण में पूर्णतः द्रष्टव्य है- ''हमारे पियाजी के कुत्ता कसाना, कुत्ता के कालर उलटाना, कहवाँ गँवल सारी रात सच्ची बोली बोलीऽ जी''। इन कतिपय नारी चित्रों के बाबजूद मगही लोकगीतों में परस्त्री और स्वकीया नारी का चरित्र वर्णन सर्वत्र द्रष्टव्य है।

मगध प्रांत में गाए जाने वाले लोकगीतों में नायक चरित्र चित्रण मुख्यतः दो रूपों में किया गया है। पहला उदात्त और दूसरा धीरललित। लोकगाथाओं के नायकों का वर्णन प्रायः उदात्त प्रवृत्ति के रूप में देखने को मिलता है। दूसरी ओर सामान्य पुरुषों का वर्णन धीरललित चरित्र का माना जाता है। इन पुरुषों में नौकरी करने वाले, कृषि कर्म करने वाले, फेंशन करने वालों की उपस्थित अधिक रहती है। वर्तमान में गाये जाने वाले लोकगीतों में दिलचस्पी महाविद्यालयों में पढ़ रहे छत्र-छात्रों के द्वारा भी लिया जा रहा है। मगही लोकगीतों में कुछ एक असमाजिक चरित्रों का भी वर्णन मिलता है।

मगही लोकगीतों के अध्ययन के समय यह बोध हुआ की जितना नायिकाओं के चरित्र का वर्णन सफलतापूर्वक किया गया उतना पुरुष नायकों को स्थान प्राप्त नहीं है। मगही लोकगीतों के गायन या श्रवण के माध्यम से हम यह स्पष्ट रूप से जान पायेंगे कि स्थान-स्थान पर नायिकाओं ने ही अपने नायक के संदर्भ में अपनी वेदना अथवा हर्षोलास की अभिव्यक्ति की है। इन्हीं अभिव्यक्तियों के कारण लोकगीतों में नायक के संदर्भ में वर्णन प्राप्त हो जाता है। मगध प्रांत में गाये जाने वाले गीतों में स्वकीया और परकीया का गीत तो है ही साथ में, देवी-देवताओं के गीता की प्रधानता उतना ही प्रबल रूप से विद्यमान है। मगही लोकगीतों में शिव-पार्वति, लक्ष्मी-नारायण, देवी माता आदि के गीतों की प्रधानता रही है। मगध प्रांत के ग्रामीण परिवेश में रह रहे लोगों की आस्था कुछ एक देवी-देवताओं में अधिक रूप से पाई जाती है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं प्रातः काल से ही मगही लोकगीत के रूप में भजन का गायन नित दिन किया करतीं हैं, जिसमें भोले बाबा और श्री हरी की भजन की महत्ता अधिक मानी जाती है। इन्हीं की भजन अधिक मात्रा में गाये भी जाते है। मगध प्रांत में गाये जाने वाले लोकगीतों में देवीमाता के गीत का महत्त्व लगभग सभी अनुष्ठानों में समान रूप से द्रष्टव्य है।

ग्राम्य जीवन में किये जाने वाले अनुष्ठानों में कुलदेवता और साथ ही ग्राम देवता की पूजा अनिवार्यतः किया जाता है। यही कारण रहा है कि ग्रामीण अनुष्ठानों में ग्राम देवता और कुलदेवता (सूखादेव) के लिए गाये जाने वाले गीतों की उपलब्धता अधिक होती है। भारतीय संस्कृति में सनातन धर्म के अंतर्गत सृष्टि में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में उपस्थित प्राकृतिक चीजों को भी देवी-देवता की उपाधी प्राप्त है जैसे- सूर्य, चन्द्र, वायु, गांगमाई, गिरिवन, पर्वत वृक्षादि आदि। मगही लोकगीतों में इनका स्थान अन्य उपमान के समान ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण रूप से विराजमान है। इन्हें देवी-देवता की मान्यता प्रदान कर इनके अनेकानेक गीतों का गायन तो किया ही जाता है साथ-साथ इन्हें साक्षी के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

सृष्टि में उपलब्ध उपमानों में प्रसिद्ध देवी-देवता की उपाधि पाये हुए प्रकृतिक उपमा के संदर्भ में गाये जाने वाले लोकगीतों में इन्हें मानवी रूप में चित्रित किया गया है। मगही लोकगीतों में देवी माता को नीम के वृक्ष पर झूला झूलते हुए वर्णन किया गया है जिसका वर्णन इस सुप्रसिद्ध गीत में द्रष्टव्य है-

''निमिया के दाढ़ मईया, झूलेली झुलुअवा, की निमिये दढिया नऽ।''

हम इस गीत के संदर्भ में दो तरह के भावनात्मक सौंदर्य की गहरी छाप देख सकते है। एक तो यह की मानवीय धार्मिक पक्ष जिसमें नीम के वृक्ष पर देवी माता का वास अर्थात आश्रय की मान्यता और दूसरी तरफ पर्यावरण संबंधित चेतना। यह सर्व विदित है की नीम और पीपल के वृक्ष सबसे ज्यादा पर्यावरण को स्वच्छ करने में मद्दगार जाने जाते है। ठीक उसी तरह सनातन संस्कृति में पीपल वृक्ष में तैतीस कोटी देवी-देवताओं का निवास करने की मान्यता है। भारतीय संस्कृति में हिन्दू समुदाय के द्वारा पीपल वृक्ष या नीम वृक्ष को काटना और गृह कार्य में प्रयोग करना वर्जित है। सनातन संस्कृति में यह मान्यता है कि मानव शरीर से प्राण निकलने के पश्चात उसके आत्मा की इस जीवन-मरन के चक्र से मुक्ति और वैकुण्ठ वास के लिए पीपल वृक्ष के नीचे ही बहुत सारे रीति रिवाजों को सम्पन्न कराने की परम्परा चली आ रही है, परन्तु अब यह परम्परा भी आधुनिक जीवन यापन के चक्र में फस का लोप होती जा रही है। अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि आने वाले कुछ एक दशकों में लोकगीत गायन परंपरा के साथ-साथ हमारे भारतीय परंपरा के ऐसे बहुत सारे संस्कार कर्म विलुप्त हो जाएंगे जो आज तक समाज को एक बंधन में एक माती के माला के समान पिरो कर रखने का कार्य करते आएं हैं। भारत वर्ष में सनातन धर्म के मान्यताओं के अनुसार शिव जी की सातों बहनों का वर्णन देखने को मिलता है। इन्हीं मान्यताओं के अन्तर्गत कुछ दंतमूलक कथाओं का वर्णन भी मिलता है जिसमें ऐसा माना जाता है कि जब भी माताएँ अपने नैहर शिवपुरी से ससूराल के लिए जाती है तो खूब रोते-बिलकती है जिस कारणवश शिव जी को अपनी बहनों के साथ उनके ससूरा तक संतावना देते हुए जाना पड़ता है। यही दृष्य आज भी प्रसांगिक है। आधुनिक समाज में भी कहीं-कहीं देखने को मिल जाता है। मगही लोकगीतों के माध्यम से हमें सातों बहने और शिव जी जैसे भाई का प्रेम वर्णन तो हमें देखने को मिलता ही है साथ ही शिव-पार्वती के रूप में संसार की प्रथम प्रेम विवाह के रूप में एक अटूट संबंध का भी वर्णन मिलता है। आज के आधुनिक परिवेश में भी एक स्त्री के मन में शिव जी जैसा पति पाने की मनोकांक्षा सबसे ज्यादा प्रबल रहता है। इसीलिए सावन के सोलह सोमवार का व्रत रख कुवारी कन्याएं शिव जी जैसा पति पाने कि मनोकामना रखती है। इन्हीं मनोकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए अनेकानेक गीतों का श्रृजन किया गया और विभिन्न अनुष्ठानों पर ईश्वर से अपने मनोकामना पूर्ण कराने के लिए इन गीतों को माध्यम बनाया जाता रहा है।

मगही लोकगीतों में गउरा-गणेश का वर्णन सर्वत्र देखने को मिलता है। हिन्दू रीति रिवाजों में किसी पूजा को आरम्भ करते ही सर्वप्रथम गोवर से निर्मित गउर-गणेश की पूजा होती है। इस विधि के अंतर्गत गोवर से बने दो कसार के रूप में आम के पत्ते पर रखा जाता और सर्वप्रथम आम के पाते से ही उन्हें स्नान कर वस्त्र और जनेऊ धारण करवाया जाता है। इसी प्रकार सुहागन स्त्रियां अपने सुहाग के दीर्घ आयु की कामना लिए भिन्न-भिन्न अनुष्ठानों में निर्जला उपवास था अनोनिया जैसे कठिन व्रत का विधिवत पालन करती है। इन अनुष्ठनों में सोमवारी, एकादसी, प्रदोस, करमा, महाअनोनिया, शिवरात्रि आदि व्रतों की गणना की जा सकती है।

शिव-पार्वती के साथ-साथ सीता-राम के वैवाहिक जीवन और उनके मध्य अतुलनिया प्रेम का वर्णन भी मिलता है। एक आरे जहाँ शिव-पार्वती के प्रेम विवाह की उपमा दे स्वयं के अमर सौभाग्य की कामना अपने इष्ट से करती तो दूसरी तरफ सिया-राम के वैवाहिक प्रेम सा प्रेम अपने प्रिये से अपेक्षा रखती है। मगही लोक गीतों में एक तरफ अगर सीता राम के बीच अगाध प्रेम का वर्णन मिलता है तो दूसरी तरफ सीता पर भरी सभा में लगे कलंक का भी वर्णन मिलता है। मगही लोकगीतों में सोहर के रूप में गाया जाने वाला गीत जिसमें राम जी के सौन्दर्य का वर्णन करते स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है-

मोहिलेलन सजनी मोरा मनवा पहुनवा राधो।

ऐ हो पहुनवा राधो सिया के सजनवा राधो।।ऽ।।

चादर चपकन लगनउती पहिरे विअहुती धोती।

गोरे-गोरे गाल पर ओपटनमा पहुनमा राधो।।ऽ।।

अखिया में कारे काजर होठाव प पानके लाली।।

लिलरा प शोभेला चंदन पहुनमा राधो।।ऽ।।

उपर्युक्त दिए गीत में यह स्पष्ट रूप से द्रष्टव्य है कि राम के सौन्दर्य का चित्रण कितना भावनात्मक रूप से किया गया है। गायिकाएं राम के सौन्दर्य से इतना मोहित है कि अपने पति में भी राम सा सौन्दर्य की कामना करती है। गीत में आगे कहतीं है कि लगनउती के समान हलके पिले रंग का वत्र और लिलार अर्थात् ललाट पर लगे चंदन की सुन्दरता और सुगंध चहु ओर को स्वयं में समाहित करती जा रही है। उनके आँखों का काला काजल मानों यहां सभी के जीवन की विघन्ता को समाप्त किये जा रही है और होठों पर पान की लाली ऐसे प्रतीत हो रही है जैसे सूर्योदय के समय मुस्कुराते हुए सूर्य की उर्जा भर देने वाली लालिमा। उससे भी अधिक गोरे-गोरे गालों पर लगा उपटन ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे किसी मुस्कुराते हुए बच्चे का गाल खुशी से खिला हुआ हो। प्रभु राम के जीवन से सम्बन्धित दंतमूलक कथा का वर्णन सर्वत्र उपलब्ध पाया जाता है।

षष्ठी व्रत जिसे मगध प्रांत में छठ के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है इसमें सूर्य को देवता और माता के रूप में माना जाता है। षष्ठी व्रत एक ऐसा अनुष्ठान है जिसे सभी पर्वों में सबसे पवित्र और महान पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस पर्व को पवित्रता और विधि विधान से मनाया जाता है। मगध में षष्ठी पर्व के गीतों की गणना अन्य अनुष्ठानों के समान है। यह कहना शायद ठीक ही होगा की सूर्य एक मात्र ऐसे देवता हैं जो प्राकृतरूप में प्रत्यक्ष उपलब्ध रहते है। जिन्हें देवी और देवता दोनों ही रूप में पूजा जाता है। एक तरफ सूर्य को देवता तो दूसरी तरफ छठी माई के रूप में भी पूजा जाता है। सूर्य की एक ऐसे देवता के रूप में आराधना की जाती है जो अपने भक्तों के साक्षात दर्शन देते है और शायद इसीलिए षष्ठी पर्व की पवित्रता और महानता अन्य पर्वों से अधिक मानी जाती है। इसी तरह गंगा नदी को भी सनातन संस्कृति में माता के रूप में पूजा जाता है और ऐसी मान्यता भी है कि मरनोपरांत अस्थियों को गंगा में विसर्जीत करने से जीवित रहते किए पाप कर्मों के छुटकारा मिल जाता है और जीवन मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त होती है।

मगही लोकगीतों में शिव-पार्वती, सिता-राम, भिन्न-भिन्न अनुष्ठान और मानव जाति से इतर तुलसी, समी, पीपल वृक्ष, वट वृक्ष, आँवला वृक्ष आदि पेड़ों का वर्णन देव समान ही किया गया है। मगही लोकगीतों में अद्वैतवाद का सार्थक विवेचन देखने को मिलता है। इसमें वर्णित लोकतात्विकता भारतीय सनातन संस्कृति की समन्वयवादिता वर्तमान समाज के लिए जीवन जीने का मर्म प्रस्तुत करती है। लोकगीतों में उपस्थित ये बीज तत्व समान्यतः समस्त बोलियों में गाये जाने वाले लोकगीतों में विद्यमान होती है। भारतीय संस्कृति के इस अतुलनीय लोक संस्कार नीहित लोकगीतों का परिवेश भले ही अलग-अलग हो परन्तु भावनात्मक एकता के कारण पूरे समाज को एक कर, एक भारत को सार्थक करती है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Umashankar Bhattacharya: Magahi proverb, 1919
Jai Nath Pati and Mahavir Singh: Magahi idiom solving, 1928
Dr. Vishwanath Prasad: Magahi sanskar geet, 1965
Dr. Ram Prasad: Magadh's folk tales: study, 1996
Sampatti Aryan: Magahi folk literature, 1965
Dr. Ram Prasad Singh: Collection of Magahi folk songs, 1998
Inamul Haq: Literary study of Magahi folk tales, 2006,
Dr. Shrikant Shastri and Dr. Ramanand Krit: Magahi Folk Songs and Sensharan
Mathura Prasad Singh and Rameshwar Mahato Kriti: Magahi Bal Geet
Vishwanath Prasad Written: Magahi Sanskar Geet
Sant Ram Nagina Singh Krit: Magahiya Geet
Appan Geet Composed by Shri Nandan Shastri
Ramdas Arya Krit: Geet Man Ke
Dr. Ram Prasad Sharma: Folk tales of Magadha: Anushilan and Sanchay
Dr. Ram Prasad Sharma: History of Magahi Literature
Dr. Vasudevanandan Prasad: Modern Hindi Grammar and Composition, 23rd Edition 1993